



श्री नरेन्द्र मोदी  
प्रधानमंत्री



# पंच-गौटव जिला पुस्तिका, बीकानेर

जिला प्रशासन, बीकानेर

# પંચ-ગોરવ



જિલા પુસ્તિકા, બીકાનેર



श्री भजनलाल शर्मा  
मुख्य मंत्री  
राजस्थान



## संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(भजन लाल शर्मा)



## संदेश

प्रदेश के विभिन्न जिलों की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, औद्योगिक और खेलों की विरासत के संरक्षण तथा इन्हें और अधिक विकसित करने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा 'पंच गौरव कार्यक्रम' की शुरूआत की गई है।

इसके तहत संभाग के चारों जिलों में भी एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल का चयन किया गया है। राज्य सरकार के निर्देशों के अनुसार पंच गौरव कार्यक्रम का बेहतर क्रियान्वयन हो, इस दिशा में प्रत्येक जिले में कार्य किया जा रहा है।

संभाग के बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम की प्रगति की नियमित समीक्षा करते हुए इसके क्रियान्वयन के लिए गठित जिला स्तरीय समितियों को राज्य सरकार के दिशा-निर्देशों से अवगत करवाया गया है।

इसी क्रम में संभाग मुख्यालय के बीकानेर जिले में एक उत्पाद के रूप में बीकानेरी नमकीन, एक उपज के रूप में मोठ, एक वनस्पति प्रजाति के रूप में रोहिड़ा, एक खेल के रूप में तीरंदाजी तथा एक पर्यटन स्थल के रूप में करणी माता मंदिर का चयन किया गया है।

यह सभी गौरव, बीकानेर को विशेष पहचान दिलाने वाले हैं। यह पहचान और अधिक सुदृढ़ हो तथा इनका संरक्षण एवं विकास हो, इसके मद्देनजर जिला स्तर पर विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। इससे जुड़े सभी तथ्यों को संकलित करते हुए 'पंच गौरव' जिला पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह पुस्तिका आमजन के लिए लाभदायक रहेगी। मैं, इसके सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देता हूँ।

  
डॉ. रविकुमार सुरपुर



डॉ. रविकुमार सुरपुर  
संभागीय आयुक्त  
बीकानेर



## श्रीमती निम्रता वृष्णि

जिला कलेक्टर  
बीकानेर

### संदेश

जिलों की विरासत और पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से राज्य सरकार द्वारा पंच गौरव कार्यक्रम शुरू किया गया है। इस तहत एक उत्पाद के रूप में बीकानेरी नमकीन, एक उपज के रूप में मोठ, एक वनस्पति प्रजाति के रूप में रोहिड़ा, एक खेल के रूप में तीरंदाजी और एक पर्यटन स्थल के रूप में श्री करणी माता मंदिर, देशनोक का चयन किया गया है।

बीकानेर के यह पंच गौरव, देश और दुनिया में जिले को विशेष पहचान दिलाते हैं। राज्य सरकार की इस अभिनव पहल से इनकी पहचान और अधिक समृद्ध हो, इसके लिए सरकार के निर्देशों की अक्षरशः पालना के साथ जिले में अनेक नवाचार किए जाने प्रस्तावित हैं।

राज्य सरकार के निर्देशानुसार जिला स्तरीय क्रियान्वयन समिति का गठन कर दिया गया है तथा इसके माध्यम से पंच गौरव कार्यक्रम का सुचारू क्रियान्वयन किया जा रहा है।

इन सभी प्रयासों को संकलित करते हुए तथा बीकानेरी नमकीन, मोठ, रोहिड़ा, तीरंदाजी और श्री करणी माता मंदिर, देशनोक से जुड़ी विशेषताओं, ऐतिहासिक परिदृश्य, इनसे जुड़ी भविष्य की योजना सहित विभिन्न बिंदुओं को संकलित करते हुए एक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह पुस्तिका जिले के प्रयासों से जन-जन को अवगत करवाएगी। मैं इसके सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं देती हूं।

  
निम्रता वृष्णि

## विषय सूची

1	पंच-गौरव' कार्यक्रम – संक्षिप्त विवरण	1-3
2	एक जिला एक उत्पाद “बीकानेरी नमकीन”	4-6
3	एक जिला एक उपज “मोठ”	7-10
4	एक जिला एक वनस्पति प्रजाति “रोहिङ्गा”	11-13
5	एक जिला एक खेल “तीरंदाजी”	14-16
6	एक जिला एक पर्यटन स्थल “श्री करणी माता मन्दिर, देशनोक”	17-19

# पंच-गौरव' कार्यक्रम

## 1. प्रस्तावना

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग-अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की बनस्पतियां पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग-अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। इसके साथ ही राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियां भी जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं।

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/ स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में "पंच-गौरव" कार्यक्रम शुरू किया गया है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत बीकानेर जिले हेतु एक जिला एक उत्पाद "बीकानेरी नमकीन", एक जिला एक उपज "मोठ", एक जिला एक बनस्पति प्रजाति "रोहिड़ा", एक जिला एक खेल "तीरंदाजी" एवं एक जिला एक पर्यटन स्थल "श्री करणी माता मन्दिर, देशनोक" चिह्नित किये गये हैं।

## 2. कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख बनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैशिक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

## 3. कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना

### अ. नोडल विभाग

पंच गौरव कार्यक्रम हेतु नोडल विभाग आयोजना विभाग है। राज्य स्तर पर एक जिला-एक उपज के लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, एक जिला-एक बनस्पति प्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, एक जिला-एक उत्पाद के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, एक जिला-एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग तथा एक जिला-एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात् विभाग नोडल एजेंसी के रूप में कार्य कर रहे हैं।

### **ब. समन्वय**

बीकानेर जिले में पंच गौरव कार्यक्रम प्रभावी क्रियान्वयन हेतु जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में निमानुसार जिला स्तरीय कमेटी का गठन किया गया है जिसमें सम्बन्धित सभी विभागों के साथ समन्वय बनाते हुए इस कार्यक्रम का प्रभावी क्रियान्वयन किया जा रहा है:-

क्रसं	अधिकारी का नाम	विभाग / कार्यालय का नाम	समिति में पद
1	जिला कलक्टर	कार्यालय जिला कलक्टर, बीकानेर	अध्यक्ष
2	उप वन संरक्षक	वन विभाग, बीकानेर	सदस्य
3	महाप्रबंधक	जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, बीकानेर	सदस्य
4	अतिरिक्त निदेशक	सूचना प्रौद्योगिकी और संचार विभाग, बीकानेर	सदस्य
5	संयुक्त निदेशक	कार्यालय कृषि विस्तार, जिला परिषद, बीकानेर	सदस्य
6	उप निदेशक	उद्यान विभाग, बीकानेर	सदस्य
7	उप निदेशक	पर्यटन विभाग, बीकानेर	सदस्य
8	उप निदेशक	सूचना और जन संपर्क विभाग, बीकानेर	सदस्य
9	जिला खेल अधिकारी	खेल एवं युवा मामलात विभाग, बीकानेर	सदस्य
10	कोषाधिकारी	जिला कोष कार्यालय, बीकानेर	नामित सदस्य
11	संयुक्त निदेशक	आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, बीकानेर	सदस्य सचिव

### **जिला स्तरीय समिति के कार्य:-**

1. जिला स्तर पर चिह्नित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
  2. पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिले में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यों पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
  3. कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा।
  4. पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
  5. पंच गौरव-जिला पुस्तिका तैयार करना।
- समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार आयोजित की जाएगी।

4. कार्यक्रम की प्रभावशीलता और सफलता सुनिश्चित करने के लिए मानदंड
- क. स्थानीय विशेषता: प्रत्येक जिले की संस्कृति और स्थानीय संसाधनों को ध्यान में रखते हुए एक विशिष्ट कृषि उपज, वनस्पति प्रजाति, उत्पाद, पर्यटन स्थल और खेल को चिह्नित किया जाएगा तथा यथा अनुरूप इनके प्रोत्साहन, संरक्षण एवं विकास हेतु गतिविधियां संपादित की जायेगी।
- ख. समुदाय की भागीदारी: कार्यक्रम के तहत स्थानीय समुदायों को शामिल किया जाएगा ताकि वे अपने जिले की विशेषताओं को पहचान सकें और उन्हें बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभा सकें।
- ग. विकासात्मक दृष्टिकोण: पंच गौरव कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल सांस्कृतिक और पर्यावरणीय संरक्षण है, बल्कि यह आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में भी सहायक होगा।
- घ. प्रशिक्षण और जानकारी: युवाओं/ स्थानीय लोगों को संबंधित क्षेत्रों में प्रशिक्षण और जानकारी प्रदान की जाएगी. जिससे वे अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकें।
- ङ. मॉनिटरिंग और मूल्यांकन:
- अ. कार्यक्रम के तहत विशेषज्ञों की समितियाँ गठित की जाएंगी. जो उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता का मूल्यांकन करेंगी। ये समितियाँ विभागीय अधिकारियों और उद्योग विशेषज्ञों से मिलकर बनी होंगी, जिससे कार्यक्रम की सफलता के लिए एक समग्र दृष्टिकोण मिलेगा।
  - ब. मॉनिटरिंग तंत्र/सेल स्थापित किया जाएगा, जिसमें सभी संबंधित गतिविधियों की नियमित रिपोर्टिंग और फीडबैक शामिल होगा।



# एक जिला एक उत्पाद

## बीकानेरी नमकीन

नोडल विभाग : उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, बीकानेर

बीकानेर रियासत में तत्कालीन महाराजा डूंगर सिंह के कार्यकाल में वर्ष 1877 में बीकानेरी भुजिया नमकीन की शुरुआत हुई थी। उस समय बनने वाला बीकानेरी भुजिया केवल बीकानेर तक ही सीमित रहा लेकिन धीरे-धीरे बीकानेर के लोग देश के अलग-अलग हिस्सों में कामकाज के लिए बसते गए और इसी के साथ ही बीकानेर का भुजिया देश की सीमाओं से होता हुआ विदेशों तक पहुंच गया।



बीकानेरी नमकीन के अन्तर्गत सर्वाधिक उत्पादन बीकानेर भुजिया व पापड़ का होता है। बीकानेर में नमकीन प्रोडक्ट्स की लगभग 60 वैरायटियों का निर्माण किया जाता है। वर्तमान में बीकानेर में लगभग 1000 भुजिया एवं 638 पापड़ की पंजीकृत इकाईयाँ कार्यरत हैं। भुजिया निर्माण की इकाईयों में 12500 श्रमिक तथा पापड़ उद्योग में 55000 महिला श्रमिक कार्यरत हैं।

पापड़ भुजिया के अतिरिक्त बड़ी-मुँगोड़ी की 76 इकाईयों में लगभग 540 श्रमिक एवं आचार उद्योग की 48 इकाईयों में लगभग 500 श्रमिक कार्यरत हैं।

बीकानेर भुजिया का भौगोलिक संकेत टेग (Geographical Indication Tag-121) भी प्राप्त कर लिया गया है।

**निर्माण विधि :-** बीकानेर में बनाया गया भुजिया देश भर में बनाए गए भुजिया के स्वाद से भिन्न है। स्वाद का यह अंतर भुजिया बनाने की विधि के कारण आता है। बीकानेरी भुजिया बनाने में बेसन, चना, मोठ दाल, हींग, मिर्च, मसाला, मुंगफली तेल का प्रयोग किया जाता है।



**प्रमुख ब्राण्ड :-** भुजिया को उद्योग के रूप में प्रसिद्धि

दिलाने में हल्दीराम एवं उनके परिवार को श्रेय जाता है। वर्तमान में देश और दुनिया में बीकानेरी नमकीन पहुंचाने में बीकाजी गुप का भी पूर्ण सहयोग रहा है, इसके अलावा भीखाराम चांदमल, बिशनलाल बाबूलाल, श्री राम पापड़, सेठिया फूड्स, खाओसा, स्काई किंग, हरिराम जी आदि प्रमुख भुजिया निर्माता इकाईयां हैं। इसके अतिरिक्त बीकानेरी नमकीन का उत्पादन लघु इकाईयों द्वारा बहुतायत से किया जाता है, खासकर प्राचीन बीकानेर शहर परकोटे के अंदर इसका उत्पादन अपनी विशिष्टता लिए हुए है।



**निर्यात संभावना :-** बीकानेरी भुजिया दुनियाभर के कई देशों में निर्यात किया जाता है। अमेरिका, जर्मनी, स्पेन, फ्रांस, रूस, पोलैण्ड, बेल्जियम, आस्ट्रेलिया, नेपाल, न्यूजीलैण्ड, कनाड़ा, कत्तर, यूएई, बहरीन एवं नार्वे आदि देशों में भी बीकानेरी नमकीन का निर्यात किया जाता है। बीकानेर से लगभग 9 हजार टन भुजिया एवं नमकीन का निर्यात विभिन्न देशों में किया जा रहा है। निर्यात को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा निर्यात प्रोत्साहन योजना शुरू की गई है।

**रोजगार :-** बीकानेरी भुजिया बीकानेर में एक कुटीर उद्योग के रूप में स्थापित परम्परागत उद्योग है। बीकानेर में सैंकड़ों परिवारों का भरण-पोषण भुजिया बनाने से हो रहा है। न सिर्फ भुजिया बल्कि बीकानेर पापड़ व बड़ी का व्यापार भी लगातार बढ़ रहा है। बीकानेर में मशीनों के अतिरिक्त हाथ से भुजिया बनाने में भी वृहद संख्या में कारीगरों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं, यही कारण है बीकानेरी भुजिया अन्यत्र जगहों से अधिक स्वादिष्टता एवं गुणवता के लिए जाना जाता है। भट्टी(हाथ से) पर बनने वाले भुजिया देश और दुनिया की डिमाण्ड पूरी नहीं कर पाने के कारण उत्पादन बढ़ाने हेतु इकाईयों द्वारा मशीनों का सहारा लिया जा रहा है। पापड़ एवं बड़ी उद्योग में घरेलु महिलाओं को बहुत मात्रा में एवं नियमित रूप से रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।



बीकानेर से हर साल लगभग 80 हजार टन का वार्षिक उत्पादन एवं अनुमानित 1600 करोड़ रूपये के भुजिया एवं नमकीन का व्यापार होता है। बीकानेरी नमकीन जैसे ही प्रत्येक जिले की सुप्रसिद्ध वस्तुओं के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा एक जिला एक उत्पाद योजना प्रारम्भ की गई है। जिससे व्यापारियों को आर्थिक रूप से संबल प्रदान करवाया जा सके।

### प्रस्तावित कार्य योजना :

- जिले के ओडीओपी उत्पाद से संबंधित उत्पादों का डेटाबेस तैयार किया जाना जिसमें उपक्रम का समस्त विवरण, वार्षिक क्षमता, रोजगार, निर्यात का विवरण आदि जानकारी शामिल हो।
- ओडीओपी उत्पाद से संबंधित उत्पादकों के प्रतिनिधित्व की दृष्टि से गठित एसोसिएशन के माध्यम से सूक्ष्म उद्योगों की सूचना संकलित करते हुए लाभ पहुंचाया जाना।
- कुटीर उद्योगों को कलस्टर के रूप में विकसित कर उत्पादों के विक्रय हेतु बाजार उपलब्ध करवाना।
- जिले के ओडीओपी उत्पादक इकाईयों को आईईसी-कोड जारी करते हुए निर्यातोन्मुखी बनाना।

- जिले के ओडीओपी उत्पादों के प्रचार-प्रसार हेतु आवश्यकता अनुसार बुकलेट/ब्रोशर तैयार करना ।
- राजस्थान सरकार द्वारा एक जिला एक उत्पाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से “एक जिला एक उत्पाद पॉलिसी-2024” में निम्न प्रावधानों के तहत पंच गौरव संवंधन हेतु निम्न कार्य किया जाएगा-
  - नवीन सूक्ष्म उद्यमों को 25 प्रतिशत या अधिकतम 15 लाख रूपये एवं लघु उद्यमों को 15 प्रतिशत या अधिकतम 20 लाख रूपये तक मार्जिन मनी अनुदान सहायता ।
  - सूक्ष्म व लघु उद्यमों को एडवांस टेक्नोलॉजी व सॉफ्टवेयर पर 50 प्रतिशत या अधिकतम 5 लाख रूपये का अनुदान ।
  - क्वॉलिटी सर्टिफिकेशन व आईपीआर पर 75 प्रतिशत या अधिकतम 3 लाख रूपये तक पुनर्भरण ।
  - विपणन आयोजनों में भाग लेने के लिए 2 लाख तक सहायता ।
  - ई-कॉमर्स प्लेटफोर्म फीस पर 75 प्रतिशत या एक लाख रूपये प्रतिवर्ष का 2 साल तक पुनर्भरण ।
  - कैटलॉगिन व ई-कॉमर्स वेबसाइट पर विकास के लिए 60 प्रतिशत या 75 हजार रूपये तक एकमुश्त सहायता ।

#### **कार्य योजना के क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित व्यय-**

पंच गौरव कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु एक जिला एक उत्पाद “बीकानेरी नमकीन” के लिए वर्ष 2025-26 में अनुमानित कुल 20 लाख रूपये व्यय किया जाना प्रस्तावित है ।



# एक जिला एक उपज मोठ

नोडल विभाग : कृषि ( विस्तार ) जिला परिषद् , बीकानेर

मोठ पश्चिम राजस्थान की प्रमुख दलहनीय फसल है। मोठ का उपयोग बीकानेरी नमकीन, भुजिया, पापड़, बड़ी एवं प्रमुखतः दाल के रूप में होता है। मोठ कम समय कम पानी एवं अधिक आय देने वाली दलहनी फसल है। मोठ की खेती हेतु जिला बीकानेर की बालु दोमट मिट्टी उपयुक्त है। मोठ की अच्छी पैदावर के लिय यहां की शुष्क जलवायु अधिक अनुकूल रहती है। बीकानेर जिले में जहां खरीफ में लगभग 16.50 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में फसलों की बुवाई होती है उसमें से लगभग 3.80 लाख हैक्टेयर क्षेत्रफल में मोठ की फसल बोई जाती है। जिला बीकानेर में नोखा



मण्डी मोठ मंडी के रूप में विश्व विख्यात है। मोठ से निर्मित बीकानेर नमकीन व भुजिया विश्व पटल पर व्यापक पहचान रखते हैं, एवं अन्य देशों व देश के भीतर अन्य राज्यों में यहां से निर्यात किया जाता है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मोठ की मांग निरंतर बढ़ रही है।

**उन्नत किस्में:-**

**आर.एम.ओ. 257:** पौधे ऊंचाई में लगभग 33 सेमी तथा फैलने वाले होते हैं। पत्तियां कम कटावदार गहरे हरे रंग की होती हैं। यह पकने में 63 से 65 दिन लेती है। इसके हजार दानों का भार 29 से 32 ग्राम होता है। यह आर.एम.ओ 40 की तुलना में 15 प्रतिशत अधिक दाने तथा 60-80 प्रतिशत अधिक सूखा चारा देती है। यह किस्म पीत शिरा मौजेक विषाणु रोधक है तथा इस पर सफेद मक्खी और तेले का प्रकोप भी कम होता है।

**आर.एम.ओ. 225 ( मरु वरदान ) ( 1999 ):** यह किस्म वर्ष 1999 में जारी की गई है। यह मोठ की शीघ्र पकने वाली किस्म है जो 66-67 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इसका पौधा मध्यम फैलावदार होता है, जिसमें 3 से 6 शाखाएं होती हैं। इसकी पत्तिया बड़ी व कम कटावदार होती है। फलीयां गुच्छे में लगती हैं। इसकी उपज 5-8 क्वटल प्रति हेक्टर दाना व साथ में 18-21 क्वटल चारा प्रति हेक्टर तक प्राप्त हो जाता है। कम समय में पकने वाली किस्म होने के कारण सूखे से बच निकलती है और पीत मौजेक विषाणु रोग रोधी है।

**आर.एम.ओ. 435 ( 2001 ):** यह किस्म आर.एम.ओ 40 के गामा विकिरण द्वारा प्राप्त की गई है। इसमें 6-8 तक प्राथमिक शाखाएं होती हैं तथा पत्तियां चौड़ी व कम कटावदार होती हैं, जो पत्तियां पकने की अवस्था पर भी हरी बनी रहती हैं। पकाय अवधि से पूर्व पड़ने वाले सूखे से यह किस्म कम प्रभावित होती है।

**आर.एम.ओ. 423 ( 2003 ):** मोठ की यह किस्म वर्ष 2002 में राजस्थान प्रदेश की सभी मोठ उत्पादन क्षेत्रों हेतु जारी की

गई है। 67-70 दिन में पकने वाली यह किस्म चारा व दाने दोनों के लिए उपयुक्त है। इसकी पत्तिया अपेक्षाकृत पतली चौड़ी व कम कटावदार होती है एवं पकने की अवस्था पर भी गहरी हरी भरी रहती है। यह किस्म पीत विषाणु रोग रोधी होने के साथ साथ कीट रोधी भी है।

**आर.एम.ओ. 40 ( 1992 ):** पीला मौजेक विषाणु रोधक किस्म की पत्तियां चौड़ी कम कटावदार व गहरे हरे रंग की होती हैं तथा पकने तक हरी रहती है। पौधा सीधा 30-40 सेन्टीमीटर ऊँचा कम फैलाव वाला होता है। फलीयां व दाने भूरे रंग के तथा पकाय अवधि 62-65 दिन हैं। इसमें सूखा सहने की क्षमता होती है। यह 6-9 क्विंटल दाने एवं 13-14 क्विंटल सूखे चारे की उपज देती है। इसके 1000 दानों का वजन 29 से 30 ग्राम होता है।

**आर.एम.ओ. 2251 ( 2018 ):** यह किस्म वर्ष 2018 में विकसित की गई है। यह मोठ की शीघ्र पकने वाली किस्म है जो 67-70 दिनों में पक जाती है। इसका पौधा मध्यम फैलावदार होता है। जिसमें नीचे के भाग में 3 से 5 शाखाएँ होती हैं। यह किस्म पीला मौजेक एवं क्रिकंल (विषाणु) रोग के प्रति मध्यम प्रतिरोधक है।

**कृषि पारिस्थितिकी स्थिति के अनुसार किस्मों की सिफारिशः** पारिस्थितिकी में मोठ की आर.एम.ओ. 436, आर.एम.ओ. 257, आर.एम.ओ. 225, आर.एम.ओ. 423 व. आर.एम.ओ. 40, पारिस्थितिकी 11 में आर.एम.ओ. 257, आर.एम.ओ. 435, आर.एम. श्री. 423, आर.एम.ओ. 225, आर.एम.ओ. 40 व पारिस्थितिकी III में आर.एम.ओ. 257, आर.एम.ओ. 435, आर.एम.ओ. 423, आर.एम.ओ. 225, आर.एम.ओ. 40 प्राथमिकता के क्रम से पैदावार दी है। अतः प्राथमिकता से क्रम से व यात किस्मों का उपयोग करें।

**बीज का उपचारः** बीज को 3 ग्राम थाईरम या 3 ग्राम कैप्टान प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। मोठ में बुवाई से पूर्व इमिडाक्लोप्रिड 600 एफ. एस. 5 मिली प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचार तथा बुवाई के 30-35 दिन बाद थायोमिथोक्जाम 25 डब्ल्यू, जी. 3 ग्राम प्रति 10 लीटर दर से छिड़काव रस चूसने वाले कीटों के प्रति प्रभावी व किफायती पाया गया है।

**उर्वरक :** सड़ी हुई गोबर की खाद 4-5 टन प्रति बीघा प्रयोग करना लाभदायक रहता है। मोठ हेतु किलो फास्फोरस व 5 किलो नत्रजन (11) किलो यूरिया व 50 किलो सगल सुपर फास्फेट या 22 किलो डीएपी) प्रति बीघा की दर से बुवाई के समय कर कर देवें। बारानी क्षेत्रों में उर्वरकों की आधी मात्रा ही देवें।

**बीज एवं बुवाई :** उन्नत किस्म का 3-4 किलो बीज प्रति बीघा प्रयोग में लेवें। बुवाई मानसून की वर्षा होने के साथ ही या वर्षा देर से हो तो 30 जुलाई तक भी की जा सकती है। कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. और पौधे से पौधे की दूरी 15 से 20 सेमी रखिए।

**निराई-गुड़ाईः** आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहे। 30 दिन की फसल होने तक निराई गुड़ाई कर देनी चाहिए। खरपतवार नियन्त्रण हेतु कतारों में बोई गई फसल में साईकिल छील बीड़र से निराई-गुड़ाई उपयुक्त है।

**जैविक मोठ उत्पादनः** जैविक मोठ के उत्पादन हेतु गोबर की खाद द्वारा उर्वरकों की संस्तुति मात्रा की 100 प्रतिशत समतुल्य (20 किग्रा नत्रजन/है) तथा नीम आधारित पौध संरक्षण करना प्रभावकारी पाया गया। इसके अलावा संस्तुति उर्वरकों की 50 प्रतिशत मात्रा के समतुल्य दी गई गोबर की खाद व 50 प्रतिशत मात्रा के समतुल्य फसल अवशेष या सड़ा-गला कार्बनिक अवशेष देना भी प्रभावकारी पाया गया है।

मोठ हेतु कार्बनिक प्रक्रिया में खाद की संस्तुति मात्रा (100 प्रतिशत गोबर की खाद जैव उर्वरक पौध संरक्षण जिप्सम हरी खाद फसल अवशेष खली की खाद नीम आधारित रसायनों) का प्रयोग कर अधिकतम उपज एवं लाभ लिया जा सकता है। मोयला, हरा तेला व मक्खी की रोकथाम हेतु 10 प्रतिशत गाय का मूत्र 5 प्रतिशत नीम की पत्तियों के सतु का छिड़काव करें।

## फसल संरक्षण

**मोयला हरा तेला व मक्खी:** मैलाथियान 50 ई.सी. या डायमिथोएट 30 ई.सी. 300 मि.ली. या मेलाथियान 8 प्रतिशत चूर्ण किलो प्रति बीधा की दर से प्रयोग करें। मोठ की फसल में रस चूसक कीटों की रोकथाम हेतु बुवाई से पूर्व फिप्रोनिल (5 एस.सी.) दवा 4 मिली प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचार प्रभावी एवं लाभप्रद पाया गया है।

**लीफ वीविल तथा ब्ल्यू बीटल (फली बीटल):** नियन्त्रण हेतु 6 किलो प्रति बीधा की दर से क्यूनालफीस 1.5 प्रतिशत चूर्ण मुरके।

**फली छेदक:** मोनोक्रोटोफ स 36 एस.एल. 300 मि.ली. या मैलाथियान 50 ई.सी. या क्यूनालफ स 25 ई.सी. 300 मि.ली प्रति बीधा की दर से फूल व कली आते ही छिड़काव करें या क्यूनालफ स 1.5 प्रतिशत चूर्ण 5-6 किलो प्रति बीधा की दर से भुरकाव कर सकते हैं। आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव / भुरकाव पुनः दोहरायें।

**रस चूसक कीड़े हरा तेला व सफेद मक्खी:** इनकी रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफ स 36. एस एल 250 मिली या डाईमिथोएट 30 ई.सी. 300 मिली प्रति या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. 300 मिली बीधा की दर से छिड़कावें। आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव दोहरावें। मोठ की फसल में इमिडाक्लोप्रिड (70 डब्ल्यू एस) 6 मिली प्रति किग्रा बीज की दर से बीजोपचार के बाद खड़ी फसल में इमिडाक्लोप्रित (17.8 एसएल) का 0.005 प्रतिशत (3 मिली / 10 लीटर पानी) घोल का छिड़काव करके रस चूसक कीटों का प्रबन्धन किया जा सकता है।

**चित्ती जीवाणु रोग:** मूंग, मीठ तथा चबला में यह रोग जैन्थोमोनास जीवाणु द्वारा फैलता है। इस रोग में छोटे गहरे भूरे रंग के धब्बे पत्तों पर तथा प्रकोप बढ़ने पर फलीयों पर और तने पर भी दिखाई देते हैं। इससे पौधे मुरझा जाते हैं। रोग दिखाई देते ही एग्रीमाइसीन 5 ग्राम या 1-2 ग्राम स्ट्रेप्टोसाईक्लिन व 30 ग्राम ताम्रयुक्त कवकनाशी का 10 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकतानुसार छिड़काव दोहरायें मीठ के बीज को 100 पीपीएम स्ट्रेप्टोसाईक्लीन घोल में एक घण्टे भिंगोकर सुखा लेवें, तत्पश्चात् 3 ग्राम केट न से उपचारित करें।

**पीला मोजेक एवं क्रिकल (विषाणु) रोग:** रोग की रोकथाम के लिए रोग का प्रकोप दिखाई देते ही डाईमिथोएट 30 ई.सी. 300 मिलीलीटर बीधा की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होतो 15 दिन के अन्तर पर फिर छिड़काव करें।

**छाछ्या रोग:** पत्तियों को ऊपरी सतह पर शुरू में सफेद गोलाकार पाउडर जैसे धब्बे हो जाते हैं तथा बाद में पाउडर सारे तने तथा पत्तियों पर फैल जाता है। पत्तियां छोटी रह कर पीली पड़ जाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए प्रति बीधा 625 ग्राम घुलनशील गंधक अथवा कैराथेन एलसी 250 मिली के घोल का छिड़काव रोग के लक्षण दिखाई देते ही एवं दूसरा छिड़काव 10 दिन पर करें अथवा 6 किलो गंधक चूर्ण भुरकें।

**पत्ति धब्बा रोग:** पत्तियों के कोणदार भूरे लाल रंग के धब्बे बनते हैं जिनके बीच का भाग सलेटी या हल्के रंग का होता है। ऐसे धब्बे डंठलों तथा फलीयों पर भी बनते हैं। रोगी पौधों की नीचे की पत्तियां पीली पड़कर सूखने लगती हैं। ऐसे पौधों का

आधा भाग व जड़ें भी सूख जाती हैं। इस रोग की रोकथाम के लिए 3 ग्राम केप्टान 75 एस. डी. प्रति किलो बीज की दर से बीज को उपचारित करके बोयें।

**पीलिया रोग:** लौह तत्व की कमी के कारण फसल में पीलापन दिखाई दे, 2.1 प्रतिशत नीम्बू का सत एवं 0.5 प्रतिशत फेरस सल्फेट का छिड़काव करें।

**मोठ में सूखा जड़ गलन:** रोगी पौधों की नीचे की पत्तियां मुड़ कर सूखने लगती हैं। ऐसे पौधों का आधा भाग व जड़ें भी सूख जाती हैं और अन्त में पौधा मुरझा जाता है। रोग बचाव के लिए 3 ग्राम केप्टान प्रति किलो बीज की दर से बीज को उपचारित करें।

मोठ में जड़ गलन रोग की रोकथाम हेतु ट्राईकोडर्मा हरजिएनम + स्यूडीनोमास फ्लोरेसेंस (4+4 ग्राम प्रति किलो बीज की दर) से बीज उपचार व भूमि उपचार हेतु (ट्राईकोडर्मा हरजेनियम 1.25 किलोग्राम स्यूडोमोमास फ्लोरेसेंस 1.25 किग्रा) को 50 किग्रा गोबर की खाद में अलग-अलग मिलाकर प्रति बीघा की दर से बुआई से पूर्व भूमि में मिलायें।

**फसल की कटाई एवं पैदावार:** फलीयों के झड़ने से होने वाली हानि को रोकने के लिए फसल को भौतिक पकाव के तुरन्त बाद काटलें। औसत उपज 1.5 से 2.0 किवंटल प्रति बीघा ली जा सकती है।

#### **प्रस्तावित कार्ययोजना (एक वर्ष हेतु खरीफ 2025 से क्रियान्वति) -**

पंच गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत एक जिला एक उपज “मोठ” को बढ़ावा देने हेतु जिला स्तरीय प्रदर्शनी एवं किसान मेला, जिला एवं ब्लॉक स्तरीय कार्यशालाओं का आयोजन, कृषक वैज्ञानिक संवाद, कृषक प्रशिक्षण, कार्म फील्ड स्कूल, मिनी कीट वितरण, उन्नत बीज वितरण कार्यक्रम, मोठ फसल प्रदर्शन, प्रसंस्करण इकाई की स्थापना सहित जिले में प्रचार प्रसार किया जाना प्रस्तावित है।

#### **कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित व्यय-**

पंच गौरव कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु एक जिला एक उपज “मोठ” के लिए वर्ष 2025-26 में अनुमानित कुल 125 लाख रूपये व्यय किया जाना प्रस्तावित है।



# एक जिला एक वनस्पति प्रजाति रोहिड़ा

नोडल विभाग : वन विभाग, बीकानेर

रोहिड़ा रेगिस्तानी / शुष्क क्षेत्रों का एक पर्णपाती या लगभग सदाबहार पेड़ है। यह आर्थिक एवं औषधीय गुणों वाला एक महत्वपूर्ण पेड़ है। रोहिड़ा की लकड़ी उत्तम गुणों से युक्त होती है, इसलिये रोहिड़ा को 'मारवाड़ का सागवान' भी कहा जाता है। यह वृक्ष थार रेगिस्तान का एक सामान्य कृषि वानिकी वृक्ष है। रोहिड़ा के फूल तीन आकर्षक रंगों (लाल, पीला व नारंगी) के होने के कारण इसे राजस्थान में 'राज्य पुष्प' का दर्जा प्राप्त है। रोहिड़ा पर फूल मार्च-अप्रैल महीने में आते हैं, अप्रैल-मई मास में फलियां पक जाती हैं। शुष्क वन अनुसंधान संस्थान जोधपुर द्वारा किए गए सर्वेक्षण के अनुसार नारंगी फूल वाले वृक्षों का घनत्व अन्य दो रंगों के वृक्षों की तुलना में अधिक है। नारंगी फूल वाले वृक्ष रेगिस्तानी क्षेत्र की विषम पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल है। रोहिड़ा के 1 कि.ग्रा. बीजों में 1.0 से 1.5 लाख बीज होते हैं। बुवाई के बाद बीज 45 दिवस में उगते हैं तथा 30 प्रतिशत अंकुरण दर होती है। बीजों की अंकुरण शक्यता 24 मास तक होती है। खेजड़ी की तरह रोहिड़ा के नीचे फसल की बढ़ोत्तरी अच्छी होती है।

## रोहिड़ा वृक्ष का क्षेत्र विस्तार:

रोहिड़ा रेगिस्तानी / शुष्क क्षेत्रों में पाया जाता है। यह राज्य के पश्चिमी भू-भाग बाड़मेर जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, सीकर, चुरू, बीकानेर, पाली, जालोर आदि जिलों में पाया जाता है। रोहिड़ा बाड़मेर, बालोतरा तथा बीकानेर जिले की प्रमुख वृक्ष प्रजाति है।



## रोहिड़ा की पारिस्थितिकी:

रोहिड़ा समतलीय ऊबड़-खाबड़ के साथ ढलान व कटाव क्षेत्र में भी पाया जाता है। यह स्थिर रेत के टीलों पर अच्छी तरह से पनपता है, जहाँ अधिक कम और उच्च तापमान का अनुभव होता है। रोहिड़ा के पेड़ पर्यावरणीय दवाब जैसे सूखपाला, आग एवं हवा को सहन कर सकते हैं। पारिस्थितिकी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता वृक्ष यह मिट्टी की ऊपरी सतह पर पार्श्व जड़ों को चाकर मिट्टी को बांधने वाले वृक्ष के रूप में कार्य करता है और खिसकते रेत के टीलों को स्थिर करने में मदद करता है। इसे रेगिस्तान में पक्षियों का घर माना जाता है और यह अन्य रेगिस्तानी जीवों, मवेशियों को



आश्रय प्रदान करता है। रोहिड़ा का तना ज्यादातर टेड़ा – मेड़ा होता है।

#### रोहिड़ा का महत्व और उपयोग:

- फर्नीचर :- रोहिड़ा की लकड़ी से सभी प्रकार का फर्नीचर बनाया जा सकता है। इस वृक्ष की लकड़ी उत्तम भौतिक एवं यांत्रिक गुणों से युक्त होती है।
- फूल :- रोहिड़ा के फूल भेड़-बकरियों के लिए चारे का काम करते हैं। स्थानीय लोंगों का मानना है कि रोहिड़ा पर अधिक फूलों का खिलना, उस वर्ष अच्छी वर्षा होने का संकेत भी देता है।
- भूमि का कटाव तथा टिब्बा स्थिरीकरण :- इसकी पार्श्व जड़ें मिट्टी के कटाव को कम करती हैं जो कि टिब्बा स्थिरीकरण में सहायक है।
- औषधीय गुण :- रोहिड़ा के विभिन्न भागों को त्वचा, फोड़े-फुंसियों, पेट के रोग, घाव, कान का रोग, आंख का रोग, मूत्र व यकृत संबंधी रोगों में उपयोग किया जाता है।

#### प्रस्तावित कार्ययोजना :-

- वन विभाग, बीकानेर द्वारा वर्ष 2024-25 में सरकार की फ्लैगशीप (महत्वकांक्षी) योजना ToFR (Tree Outside Forest पद Rajasthan) के अंतर्गत 17.80 लाख पौधे तैयारी का कार्य चल रहा है। उक्त कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए चयनित वनस्पति प्रजाति रोहिड़ा के 1.7 लाख पौधे तैयार किये जा रहे हैं। जिन्हे वर्ष 2025-26 में वर्षाकाल में आमजन को विभागीय दिशा-निर्देशों के तहत वितरित किये जायेंगे तथा विभागीय वृक्षारोपणों में रोहिड़ा का अधिकाधिक पौधारोपण कराया जायेगा।
- इस कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सम्पूर्ण जिले में वन विभाग के अंतर्गत पंजिकृत ग्राम्य वन सुरक्षा एवं प्रबंध समितियों के माध्यम से वनक्षेत्र एवं वनक्षेत्र के बाहर वृहद स्तर रोहिड़ा बीज के संग्रहण का कार्य व्यापक स्तर पर चलाया जायेगा इसके फलस्वरूप स्थानीय लोगों को रोजगार तो मिलेगा ही साथ में उक्त कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार भी हो सकेगा।
- संग्रहीत बीजों से विभागीय पौधशालाओं में रोहिड़ा के अधिकाधिक पौधे तैयार किये जा सकेंगे तथा स्थानीय लोगों को स्वयं की निजी भूमि पर विकेन्द्रीकृत पौधशालाओं के माध्यम से रोहिड़ा पौध तैयारी के लिए जागरूक किया जायेगा इसके माध्यम से स्थानीय लोगों को रोजगार, पौधे तैयारी का ज्ञान, वृक्षारोपण का महत्व, पर्यावरण संरक्षण इत्यादि लाभार्जन के साथ इस कार्यक्रम के लाभों को भी प्राप्त किया जा सकेगा।
- रोहिड़ा के संग्रहित बीजों को इस कार्यक्रम के तहत ग्राम पंचायतों/शहरी निकायों को वितरित किया जायेगा। ग्राम पंचायतें/शहरी निकाय/मनरेगा/शहरी रोजगार गारन्टी योजना के माध्यम से स्वयं के स्तर पर रोहिड़ा पौधे की पौधशाला स्थापित की जा सकेंगी जिसमें स्थानीय लोगों को रोजगार और रोहिड़ा के पौधे उपलब्ध हो सकेंगे जिसके माध्यम से आमजन, ग्राम पंचायतें और शहरी निकाय द्वारा वृहद स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण किया जा सकेगा।
- विगत वर्षों में रोहिड़ा की छंगाई से प्राप्त लकड़ी को मानव अपने लिए और पशुओं के लिए इकोफैंडली आवास बनाने में काम लेते रहे हैं। जो उस क्षेत्र की प्राकृतिक सौन्दर्यता, पारम्परिक हस्तकला और पर्यावरणीय स्तर को संरक्षित करता था। इस कार्यक्रम के तहत रोहिड़ा का अधिकाधिक वृक्षारोपण करवाकर भविष्य में छंगाई से प्राप्त लकड़ी को इकोफैंडली

आवास बनाकर पारम्परिक हस्तकला और प्राकृतिक सौन्दर्य को संरक्षित कर पारम्परिक संस्कृति और इकोट्रूरिज्म को बढ़ावा दिया जा सकेगा।

- आगामी वर्षों में वन विभाग इस कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित एक जिला एक वनस्पति प्रजाति रोहिङ्डा के वृक्षारोपण के ऊपर उल्लेखित महत्वों के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए वन विभाग द्वारा मनाये जाने वाले पर्यावरणीय दिवसों की थीम के साथ ही इस कार्यक्रम को शामिल किया जायेगा। इसके साथ ही प्रदर्शनी, कठपुतली, गांवों में भाण्ड द्वारा किये जाने वाले लोक पारम्परिक वृतान्त, कथाओं, रामलीला के माध्यम से प्रचार-प्रसार किये जायेगा जिससे रोहिङ्डा संरक्षक के साथ-साथ पुरानी परम्परा लोक संस्कृति/परम्पराओं को भी संरक्षित रखा जा सकेगा।

पंच गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत एक जिला एक वनस्पति प्रजाति “रोहिङ्डा (टेकोमेला अंडूलेटा)” को बढ़ावा देने हेतु जिले में रोहिङ्डा के 1.7 लाख पौधे तैयार किये जा रहे हैं, इस कार्यक्रम के अंतर्गत पंजीकृत ग्राम्य वन सुरक्षा एवं प्रबंध समितियों के माध्यम से वनक्षेत्र एवं वनक्षेत्र के बाहर वृहद स्तर रोहिङ्डा बीज के संग्रहण का कार्य व्यापक स्तर पर चलाया जाना प्रस्तावित है।

- वन नर्सरियों में रोहिङ्डा के पौधों की तैयारी
- स्थानीय लोगों को वितरण
- वन क्षेत्र में वृक्षारोपण
- 2 हैक्टेयर में रोहिङ्डा का grove स्थापित करना
- नुककड़ नाटक, कठपुतली एवं प्रदर्शनी के माध्यम से जागरूकता

**कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित व्यय-**

पंच गौरव कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु एक जिला एक वनस्पति प्रजाति “रोहिङ्डा” के लिए वर्ष 2025-26 में अनुमानित कुल 32 लाख रूपये व्यय किया जाना प्रस्तावित है।



# एक जिला एक खेल

## तीरंदाजी

नोडल विभाग : खेल एवं युवा मामलात विभाग, बीकानेर

बीकानेर में तीरंदाजी खेल का आरम्भ लगभग 1990 में हुआ और उसके बाद से ही कम मूलभूत सुविधाओं के साथ ही बीकानेर के कई खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया और समय के साथ धीरे-धीरे ये खेल बीकानेर में इतना प्रचलित हो गया कि यहाँ से अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों ने अपना व अपने जिले और देश का नाम रोशन किया बीकानेर के प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी जगदीश चौधरी बने तथा उनसे प्रेरित होकर बीकानेर में तीरंदाजी का प्रचलन बढ़ा और आज के समय में बीकानेर के अनेक खिलाड़ी हैं जिन्होंने राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लिया और पदक प्राप्त किया है।

- **तीरंदाजी एक पारंपरिक और रोमांचक खेल है, जिसमें शारीरिक और मानसिक दोनों तरह की क्षमताओं की आवश्यकता होती है।** यह खेल न केवल शारीरिक रूप से मजबूत बनाता है, बल्कि मानसिक रूप से भी स्थिरता और एकाग्रता प्रदान करता है।
- **तीरंदाजी के कई प्रकार होते हैं, और यह अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न तरीकों से खेली जाती है।** मुख्य प्रकार निम्नलिखित है :-
- **रिकर्व तीरंदाजी :-** यह प्रकार ओलम्पिक खेलों में सबसे सामान्य रूप से पाया जाता है। इसमें धनुष की दोनों शाखाएं बाहर की ओर मुड़ी होती हैं, और यह तीर को अधिक दूरी तक और अधिक शक्ति से छोड़ने में सक्षम होता है।
- **कंपाउंड तीरंदाजी :-** इसमें एक विशेष प्रकार का धनुष होता है, जो यांत्रिक लीवर के माध्यम से तीर को छोड़ता है। यह तीर को अधिक सटीकता और शक्ति से छोड़ने में मदद करता है। यह विशेष रूप से प्रतियोगिताओं में उपयोगी होता है।
- **लांगबो :-** यह एक पारंपरिक प्रकार का धनुष होता है, जो लंबा और सीधा होता है। इसे युद्ध के समय और शिकार के लिए इस्तेमाल किया जाता था। आजकल इस ऐतिहासिक पुनर्निर्माण में देखा जाता है।
- **तीरंदाजी के फायदे :-** तीरंदाजी के कई फायदे हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार है :-
  - शारीरिक रूप से मजबूत बनाता है।
  - मानसिक रूप से स्थिरता और एकाग्रता प्रदान करता है।
  - आत्मविश्वास बढ़ाता है।



- धैर्य और संयम की आवश्यकता होती है।
- तीरंदाजी खेल में अच्छे परिणाम लाने के लिए पंच गौरव योजना के तहत एक जिला एक खेल के लिये पर्याप्त मैदान, अच्छे उपकरण, डायटीसियन, योगा, मनोविज्ञानिक क्लास, फिजियो जिम, प्रोपर कोचिंग के तहत बच्चों को और आगे बढ़ाने के लिए कार्य किया जाना प्रस्तावित है।
- इस योजना से आर्थिक रूप से कमज़ोर तीरंदाजी खिलाड़ियों को सर्च प्रोग्राम चलाया जायेगा। जिसमें आर्थिक रूप से कमज़ोर व योग्य खिलाड़ियों को बेहतर अभ्यास करवाया जायेगा।
- बीकानेर जिले में अनेक तीरंदाजी खिलाड़ियों ने बिना किसी सरकारी सुविधा के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक प्राप्त किये हैं। सरकार की इस योजना के तहत उन सभी खिलाड़ियों को अच्छा अभ्यास कराया जायेगा तो आने वाले समय में और अधिक पदक प्राप्त कर सकेंगे और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जिले तथा प्रदेश का नाम रोशन कर सकेंगे।
- इस योजना के तहत तीरंदाजी खेल के लिये आवश्यक बुनियादी ढांचे जैसे तीरंदाजी रेंज, उपकरण, जिम, योगा हॉल आदि सुविधाओं का विकास किया जायेगा।
- इस योजना के तहत तीरंदाजी खेल में खिलाड़ियों को समय – समय पर प्रतियोगिता करवाकर पुरस्कार प्रदान करना जिससे युवा तीरंदाजों को अपनी प्रतिभा को विकसित करने के लिए प्रेरित किया जा सके।
- तीरंदाजी खेल में बीकानेर के अन्तर्राष्ट्रीय पदक विजेता खिलाड़ी :-

  - जगदीश चौधरी** :- इन्होंने प्रथम बार बैंकाक, थाईलैण्ड में आयोजित फस्ट एशिया कप मार्च 2016 में व्यक्तिगत स्पर्धा में रजत पदक व टीम प्रतिस्पर्धा में कांस्य पदक प्राप्त किया।
  - अन्तर्राष्ट्रीय तीरंदाजी यूथ फेस्टा, कोरिया मई 2016 में आयोजित प्रतियोगिता में व्यक्तिगत स्पर्धा में कांस्य पदक व मिक्स टीम में कांस्य पदक व टीम स्पर्धा कांस्य पदक प्राप्त किया।

- पवन घाट** :- इन्होंने एशिया कप वर्ल्ड रेकिंग प्रतियोगिता स्टेज फस्ट चार्झनिज ताइपे, मार्च 2023 में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- एशिया कप वर्ल्ड रेकिंग प्रतियोगिता स्टेज फस्ट चार्झनिज ताइपे, मार्च 2023 में टीम स्पर्धा में रजत पदक प्राप्त किया। विश्व तीरंदाजी यूथ चैम्पियनशीप जुलाई, 2023 में आयोजित प्रतियोगिता में टीम स्पर्धा में रजत पदक प्राप्त किया।
- श्याम सुन्दर स्वामी** :- पैरा ओलम्पिक गेम्स 2020, टोक्यो में भाग लिया।
- पैरा ओलम्पिक गेम्स 2024, पेरिस में भाग लिया।
- पैरा वर्ल्ड चैम्पियनशीप 2023, पोलेण्ड में टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- पैरा एशिया कप 2024 बैंकाक, थाईलैण्ड में व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।
- पैरा एशियन गेम्स 2023, चाईना में भाग लिया।



**4. धनाराम गोदारा** :- पैरा एशिया कप 2024, रिक्वी टीम इवेन्ट में स्वर्ण पदक प्राप्त किया

पैरा वर्ल्ड कप 2023, व्यक्तिगत स्पर्धा में कांस्य पदक प्राप्त किया ।

**5. रामपाल चौधरी** :- एशिया कप 2023, टीम स्पर्धा में 03 स्वर्ण पदक व व्यक्तिगत स्पर्धा में रजत पदक प्राप्त किया ।

**6. प्रांजल ठोलिया** :- यूथ एशियन चैम्पियनशीप 2024, चार्झिनिज ताइपे में टीम स्पर्धा में रजत पदक प्राप्त किया ।

**7. पियूष जोशी** :- एशिया कप 2024, ईराक में भाग लिया ।

**8. माया बिश्नोई** :- एशिया कप 2024, कोरिया में टीम स्पर्धा में रजत पदक प्राप्त किया ।

#### **प्रस्तावित कार्ययोजना :**

- तीरंदाजी खेल में अच्छे परिणाम लाने के लिए पंच गौरव योजना के तहत एक जिला एक खेल के लिये पर्याप्त मैदान, अच्छे उपकरण, डायटीसियन, योगा, मनोविज्ञानिक क्लास, फिजियो जिम, प्रोपर कोचिंग के तहत बच्चों को और आगे बढ़ाने के लिए कार्य किया जायेगा ।
- इस योजना से आर्थिक रूप से कमजोर तीरंदाजी खिलाड़ियों को सर्च प्रोग्राम चलाया जायेगा । जिसमें आर्थिक रूप से कमजोर व योग्य खिलाड़ियों को बेहतर अभ्यास करवाया जायेगा ।
- बीकानेर जिले में अनेक तीरंदाजी खिलाड़ियों ने बिना किसी सरकारी सुविधा के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक प्राप्त किये हैं । सरकार की इस योजना के तहत उन सभी खिलाड़ियों को अच्छा अभ्यास कराया जायेगा तो आने वाले समय में और अधिक पदक प्राप्त कर सकेंगे और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जिले तथा प्रदेश का नाम रोशन कर सकेंगे ।
- इस योजना के तहत तीरंदाजी खेल के लिये आवश्यक बुनियादी ढांचे जैसे तीरंदाजी रेंज, उपकरण, जिम, योगा हॉल आदि सुविधाओं का विकास किया जायेगा ।
- इस योजना के तहत तीरंदाजी खेल में खिलाड़ियों को समय - समय पर प्रतियोगिता करवाकर पुरस्कार प्रदान करना जिससे युवा तीरंदाजों को अपनी प्रतिभा को विकसित करने के लिए प्रेरित किया जा सके ।

#### **कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित व्यय-**

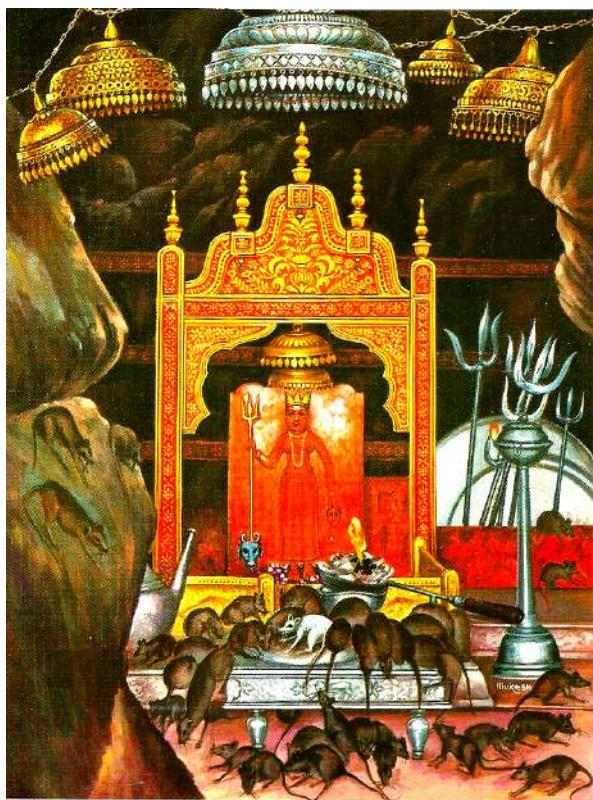
पंच गौरव कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु एक जिला एक खेल “तीरंदाजी” के लिए वर्ष 2025-26 में अनुमानित कुल 70 लाख रूपये व्यय किया जाना प्रस्तावित है ।

# एक जिला एक पर्यटन स्थल

## श्री करणी माता मन्दिर, देशनोक

नोडल विभाग : पर्यटन विभाग, बीकानेर

बीकानेर जिले में सबसे लोकप्रिय पर्यटक आकर्षणों में से एक श्री करणी माता मंदिर, देशनोक है जिन्हें स्थानीय लोगों द्वारा देवी दुर्गा का अवतार माना जाता है। श्री करणी माता को अपने जीवन काल के दौरान तपस्वी जीवनशैली के कारण बहुत आदर - सम्मान और बड़ी संख्या में अनुयायी मिले। जोधपुर और बीकानेर के महाराजाओं ने उनका आशीर्वाद लिया, यहाँ तक कि उन्होंने



मेहरानगढ़ और बीकानेर किलों की आधारशिला भी रखी। बीकानेर से 30 किमी दूर स्थित देशनोक में श्री करणी माता मंदिर सबसे प्रसिद्ध और व्यापक रूप से देखा जाने वाला मंदिर है।

श्री करणी माता का अवतरण चारण कुल में वि. सं. 1444 अश्विनी शुक्ल सप्तमी, शुक्रवार तदनुसार 20 सितम्बर, 1387 ई. को सुआप (जोधपुर) में मेहाजी किनिया के घर में हुआ था। श्री करणी माता ने जनहितार्थ अवतार लेकर तल्कालीन जांगल प्रदेश को अपनी कर्मस्थली बनाया। श्री करणी माता ने ही राव बीका को जांगल प्रदेश में राज्य स्थापित करने का आशीर्वाद दिया था। श्री करणी माता ने मानव मात्र एवं पशु-पक्षियों के संवर्द्धन के लिए देशनोक में दस हजार बीघा 'ओरण' (पशुओं की चराई का स्थान) की स्थापना की थी। श्री करणी माता ने पूगल के राव शेखा को मुल्लान (वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित) के कारागृह से मुक्त

करवा कर उसकी पुत्री रंगकंवर का विवाह राव बीका से संपन्न करवाया था। श्री करणी माता की गायों का चरवाहा दशरथ मेघवाल था। डाकू पेंथड़ और सूजा मोहिल से गायों की रक्षार्थ जूझ कर दशरथ मेघवाल ने अपने प्राण गवां दिए थे। श्री करणी माता ने डाकू पेंथड़ व सूजा मोहिल का अंत कर दशरथ मेघवाल को पूज्य बनाया जो सामाजिक समरसता का प्रतीक है।

बताते हैं कि संवत् 1595 की चैत्र शुक्ल नवमी, गुरुवार को श्री करणी माता ज्योर्तिलीन हुई। संवत् 1595 की चैत्र शुक्ल चतुर्दशी से यहाँ श्री करणी माता की निरन्तर सेवा पूजा होती चली आ रही है।

#### वास्तुकला :



श्री करणी माता मंदिर का निर्माण बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह द्वारा 20वीं शताब्दी के आरंभ में संपन्न हुआ था। संपूर्ण मंदिर स्थापत्य संरचना संगमरमर से बनी हुई है। आकर्षक संगमरमर के अग्रभाग आकर्षण को और बढ़ाते हैं, ठोस चांदी के दरवाजे जो भीतर परिसर में प्रवेश की ओर ले जाते हैं, इन चांदी के दरवाजों के पैनल, देवी की कई किंवदंतियों को दर्शाते हैं। श्री करणी माता की मूर्ति, मंदिर के आंतरिक गर्भगृह में विराजमान है। यह मूर्ति 75 सेमी ऊँची है एवं एक हाथ में त्रिशूल धारण किए हुए हैं जो मुकुट और माला से सुशोभित हैं।

#### श्री करणी माता मंदिर की प्रमुख विशेषता :



श्री करणी माता मंदिर अपने स्थान या वास्तुकला के लिए ही नहीं अपितु 25,000 से अधिक चूहों के घर होने के कारण भी लोकप्रिय है।

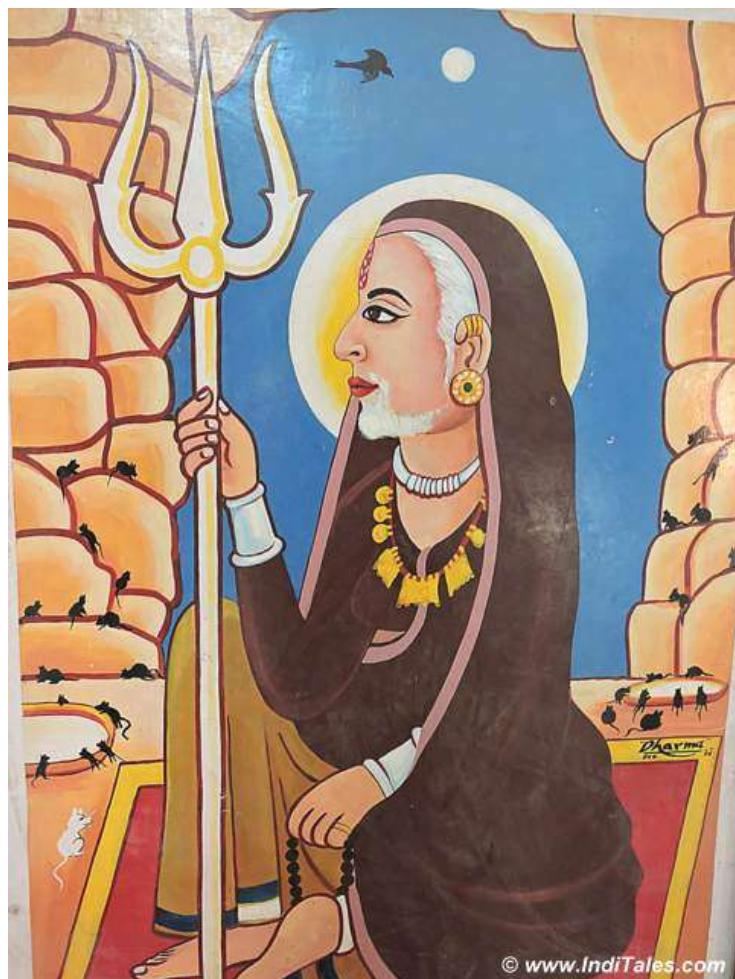
इस मंदिर में सैकड़ों की संख्या में चूहे पाए जाते हैं और इन्हें “काबा” कहा जाता है। मंदिर में प्रवेश करने वाले भक्तों को इन चूहों के साथ श्रद्धा पूर्वक पेश आना होता है। यहाँ का प्रसाद भी चूहों को दिया जाता है और मंदिर के प्रांगण में चूहों की उपस्थिति इस स्थल की विशिष्टता को दर्शाती है।

## **प्रस्तावित कार्य योजना :**

- पंच गौरव कार्यक्रम के अंतर्गत एक जिला एक पर्यटन स्थल “श्री करणी माता मन्दिर, देशनोक” को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में प्रमोट करने हेतु अभियान चलाकर सोशल मीडिया, वेबसाइट, ब्रोशर, टूरिज्म फेयर और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर प्रचार प्रसार, पर्यटकों हेतु बेहतर यातायात सुविधाएं एवं आराम के लिए होटल, रेस्टोरेंट, और विश्राम स्थलों का विकास, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों, वार्षिक मेलों का आयोजन किये जाकर जिसमें राजस्थानी कढ़ाई, हस्तनिर्मित वस्त्र, गहने और अन्य स्थानीय कला और शिल्प मेलों के पारंपरिक उत्पादों की दुकानें लगाना, पर्यटन सूचना केंद्र स्थापित किया जाकर स्थानीय लोगों को पर्यटक सेवा में प्रशिक्षण दिया जाना एवं पर्यटकों की संख्या अधिक होने पर सुरक्षा व्यवस्थाओं को बेहतर किया जाना प्रस्तावित है।

## **कार्य योजना के क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित व्यय-**

- वर्तमान में पर्यटन स्थल श्री करणी माता मन्दिर देशनोक के विकास हेतु केंद्र सरकार की प्रसाद योजना में चयनित किया गया है जिसके तहत लगभग 23 करोड़ रुपये व्यय किया जाना प्रस्तावित है एवं पंच गौरव कार्यक्रम के अन्तर्गत देशनोक तीर्थ के पर्यटकों की सुरक्षा हेतु 05 पर्यटक सहायता बल के कर्मियों की नियुक्ति एवं मेले के अवसर पर वर्ष में तीन बार सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन हेतु वार्षिक 35 लाख रुपये व्यय किये जाने प्रस्तावित है।



© www.IndiTales.com

**.. मार्गदर्शन ..**

**श्रीमती नम्रता वृष्णि**  
जिला कलकटर, बीकानेर

**श्री सोहन लाल**  
मुख्य कार्यकारी अधिकारी  
जिला परिषद्, बीकानेर

**.. संपादक ..**

**श्री रोहिताशव सूनिया**

संयुक्त निदेशक  
आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, बीकानेर

**श्री हरिशंकर आचार्य**

उप निदेशक  
सूचना एवं जन संपर्क कार्यालय, बीकानेर

**.. सहयोग ..**

**श्री बृजभूषण व्यास**  
सहायक सांख्यिकी अधिकारी

**श्री भरत सोलंकी**

सहायक प्रोग्रामर

---

**जिला प्रशासन, बीकानेर**



मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा 20 जनवरी 2024 को सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज में संभाग स्तरीय अधिकारियों की बैठक के दौरान आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए



मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा 'मुख्यमंत्री रोजगार उत्सव' के दौरान वीडियो कास्ट्रेंस के माध्यम से युवाओं को संबोधित करते हुए



मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत 20 जनवरी 2024 को भानीपुरा में  
आयोजित शिविर में आमजन को संबोधित करते हुए।



मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा 28 जुलाई 2024 को मूलवास सीलवा में संत श्री दुलाराम कुलरिया राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के  
लोकार्पण समारोह में शिरकत करते हुए।